प्रकाशन तिथि : 01 जून, 2025
प्रेषण तिथि : 04 जून, 2025

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 29 | अंक 06 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

(उदयपुर में 18 से 29 मई तक हुआ उच्च प्रशिक्षण शिविर का आयोजन)

पूज्य तनसिंह जी के अनुग्रह को समझ कर बढ़ें संघमार्ग परः संरक्षक श्री

अपना घर-परिवार, कामकाज आदि सब छोड़कर हम श्री क्षत्रिय युवक की शरण में आए हैं। पूर्व संस्कारों और अच्छे कर्मों के कारण ही आप यहां आ पाए हैं। यहां हम कुछ खोने और कुछ पाने आए हैं। क्या खोना है और क्या पाना है यह आपको यहां शिविर में समझाया जाएगा। यहां जो चर्चा होगी, उसी से आपके भीतर यह समझ विकसित होगी कि सद्गुणों को ग्रहण करना है और अवगुणों को छोड़ना है। यह समझ आ जाने पर संघमार्ग पर बढ़ने का संकल्प भी जगेगा। इस संकल्प को उत्तरोत्तर प्रबल बनाएं और जिस मार्ग पर आप चले हैं, उस पर निरंतर चलते रहें। चरैवेति - चरैवेति। पूज्य श्री तनसिंह जी ने हमें अपने मन के मोती कहा है। इससे बढ़कर उनका हम पर और क्या अनुग्रह हो सकता है? उनके अनुग्रह को हम समझें और सावधानी पूर्वक इस मार्ग पर कदम बढ़ाते रहें। यदि सावधानी नहीं रखी और कदम बढ़ाने में चूक कर पीछे रह गए तो वर्षों की साधना भी बेकार हो सकती है। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने 18 मई को उदयपुर के भूपाल नोबल्स संस्थान परिसर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कही। उन्होंने कहा कि संघ में निरंतर चलते रहने के लिए धैर्य बहुत आवश्यक है। इस मार्ग पर चलते हुए हमसे अनेकों भूलें भी होती हैं, आगे भी होंगी लेकिन यह इतनी महत्वपूर्ण बात नहीं है बल्कि हमारा आचरण और चरित्र कैसा है, उसे श्रेष्ठ बनाने के लिए हम कितने तत्पर हैं, यही महत्वपूर्ण है। हमें आत्मानुशासन द्वारा इंद्रियों और मन पर नियंत्रण करना सीखना है। इसके लिए भगवान श्री कृष्ण द्वारा गीता में बताया गया अभ्यास और वैराग्य का मार्ग ही एकमात्र मार्ग है। जिन चीजों पर हमारा राग हो गया है, जहां पर हम अनुरक्त हो गए हैं, उस राग व अनुरक्ति को छोड़ने का संकल्प ही वैराग्य है और छोड़ने का बारंबार प्रयत्न ही अभ्यास है। यही तपस्या है। इस तपस्या से यहां जो ज्ञान आप अर्जित कर रहे हैं, उसको पुनः समाज में जाकर बांटना है। माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के संचालन में आयोजित बालकों के उच्च प्रशिक्षण शिविर में 18 मई से राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों से 400 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 17 मई की शाम से ही स्वयंसेवक शिविर स्थल पर पहुंचना प्रारंभ हो गए थे। शिविरार्थियों को 45 घटों व 16 पथकों में बांट कर प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिदिन प्रातःकाल 4 बजे जागरण से लेकर रात्रि 10 बजे शयन तक विभिन्न गतिविधियों का आयोजन हुआ। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

श्रेष्ठ माता ही करेगी श्रेष्ठ संतान का निर्माणः हरदासकाबास

(उदयपुर में सात दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर का आयोजन, 240 बालिकाओं ने लिया प्रशिक्षण)

वर्तमान समय में बालिका शिक्षा के साथ बालिका संस्कारों की भी महत्ती आवश्यकता है क्योंकि नारी शक्ति समाज की धुरी है। किसी भी समाज के भविष्य निर्माण में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि माता के रूप में वही संतान के संस्कारों का निर्माण करती है। जैसे संस्कार माता के होंगे वैसे ही संस्कार उसकी संतान के होंगे। श्रेष्ठ माता ही श्रेष्ठ संतान का निर्माण कर सकती है। आज की बालिका कल की आदर्श माता बन सके, इसके लिए बालिकाओं को संस्कारित करना समय की मांग है और इस मांग को पूरा करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ आपको इस शिविर में बुलाकर प्रशिक्षण दे रहा है। उपर्युक्त बात वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास ने उदयपुर स्थित भूपाल नोबल्स संस्थान परिसर के सांगा हाऊस में आयोजित श्री क्षत्रिय युवक संघ के सात दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर में बालिकाओं का स्वागत करते हुए कही। उन्होंने कहा कि आगामी सात दिनों तक आपको यहां पर कठिन साधनामय जीवन जीना है क्योंकि तपस्या और साधना से ही श्रेष्ठता अर्जित की जा सकती है। शिविर से जाने के बाद भी संघ का उद्देश्य ही आपके जीवन का उद्देश्य बन जाए ऐसा प्रयास करना है। इसके लिए निरंतर शिविरों में आते रहना होगा और शाखा के माध्यम से संघ के नियमित संपर्क में रहना होगा। 23 से 29 मई तक आयोजित इस शिविर में राजस्थान व गुजरात के विभिन्न स्थानों से पहुंची 240 मातृशक्ति ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला के निर्देशन में जागृति बा ने शिविर का संचालन किया।

विभिन्न स्थानों पर मनाई बुद्ध पूर्णिमा

12 मई को महात्मा बुद्ध की जयंती के उपलक्ष्य में श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं द्वारा विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें से कुछ के समाचार गत अंक में प्रकाशित हुए थे, शेष के समाचार इस अंक में प्रकाशित किए जा रहे हैं। गुजरात के सुरेन्द्रनगर में स्थित शक्तिधाम कार्यालय में 11 मई को बुद्ध जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा ने महात्मा बुद्ध के जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि महात्मा बुद्ध ने तत्कालीन समय की धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था में आई विकृतियों को दूर करने के लिए एक आध्यात्मिक आंदोलन खड़ा किया। बुद्ध के विराट व्यक्तित्व और तेजस्विता ने उस आंदोलन को भारत में ही नहीं बल्कि अन्य देशों में भी फैलाया। जब भी समाज में बहुत अधिक विकृतियां फैल जाए, तब ऐसे ही आंदोलन की आवश्यकता होती है। संघ भी ऐसा ही एक आंदोलन है। कार्यक्रम के दौरान संभाग में संघकार्य के विस्तार पर भी चर्चा की गई। कार्यक्रम के अंत में स्नेहभोज भी रखा गया। मध्य गुजरात संभाग के काणेटी गांव में 12 मई को शाखा स्तर पर बुद्ध पूर्णिमा उत्सव मनाया गया। 12 मई को ही पाली प्रांत के रोहिट मंडल की धींगाणा शाखा में भी बुद्ध जयंती मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा ने तथागत बुद्ध का जीवन परिचय दिया और उनके जीवन की विभिन्न घटनाओं का वर्णन करते हुए उनके दर्शन को समझाया। कार्यक्रम के पश्चात प्रसाद वितरण भी किया गया। पाली प्रांत के रानी मंडल में भी छोटी रानी स्थित भगवान शिव मंदिर परिसर में महात्मा बुद्ध की जयन्ती मनाई गई। मंडल प्रमुख हीर सिंह लोड़ता ने महात्मा बुद्ध के जीवन परिचय के बारे मे बताया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के अजयपाल सिंह गुडा पृथ्वी राज व महिपाल सिंह खुनी का गुडा ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर रतन सिंह, नरपत सिंह, जब्बर सिंह, भीक सिंह, नाथु सिंह, नारायण सिंह छोटी रानी आदि समाजबंधु उपस्थित रहे। उदयपुर में बी एन परिसर में स्थित ओल्ड बॉयज भवन में भी बुद्ध पूर्णिमा मनाई गई। धामसीन के आशापुरा माताजी मंदिर में भी शाखा स्तर पर कार्यक्रम रखा गया। भीलवाड़ा में भी बालक व बालिका शाखाओं में कार्यक्रम रखे गए। भीलवाड़ा के रायला में भी कार्यक्रम हुआ। श्री करणी बालिका शाखा खिवांदी में भी कार्यक्रम रखा गया।

रात्रि कार्यक्रम

उच्च प्रशिक्षण शिविर एवं मातृशक्ति माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में रात्रि के भोजन के पश्चात एक घंटे के रात्रि कार्यक्रम में विनोद सभा, शास्त्रार्थ, दोहा-श्लोक-चौपाई, संघ प्रवेश, मेरी चाह, अंत्याक्षरी, शिविर अनुभव आदि गतिविधियां आयोजित हुईं।

खेलों के माध्यम से संघदर्शन का व्यावहारिक अभ्यास

संघदर्शन को स्वयंसेवक के जीवन में ढालने की व्यावहारिक प्रयोगशाला शिविरों और शाखाओं में खेले जाने वाले खेल हैं। न्यूनतम साधनों से खेले जा सकने वाले इन खेलों में संघर्षशीलता, अनुशासन, ईमानदारी, बंधुत्व, सामूहिक सहयोग की भावना आदि गुणों का सहज अभ्यास होता है। उदयपुर उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान शिविरार्थियों को अनेक पथकों में बांटकर प्रतिदिन तीन सत्रों में खेल खिलाए गए जिनमें प्रातःकाल में संघर्षप्रधान खेल, दोपहर के विश्राम के बाद बौद्धिक खेल और शाम के सत्र में चुस्ती-फुर्ती और दौड़ वाले खेल खिलाए गए। बालिका शिविर में भी प्रतिदिन तीन सत्रों में इसी प्रकार खेल खिलाए गए।

यज्ञ

उच्च प्रशिक्षण शिविर एवं मातृशक्ति शिविर में प्रतिदिन स्नान के पश्चात घटानुसार यज्ञ श्री क्षत्रिय युवक संघ की संक्षिप्त दैनिक यज्ञ विधि पुस्तिका में वर्णित विधि के अनुसार संपन्न किया गया। 21 मई को सामूहिक यज्ञ हुआ जिसमें शिविरार्थियों द्वारा नवीन यज्ञोपवीत धारण किए गए।

शंका-समाधान

27 मई को माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर में शंका-समाधान कार्यक्रम हुआ जिसमें संघप्रमुख श्री ने शिविरार्थी बालिकाओं की विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान किया।

गहरे उतरकर अर्जित किए पूज्य तनसिंह जी के भावों के मोती

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी ने संघ और समाज के प्रति अपने भावों और अनुभवों को सहगीतों के रूप में प्रकट किया है जिन्हें झनकार पुस्तिका में संकलित किया गया है। ये सहगीत संघमार्ग पर बढ़ते समय आने वाली विभिन्न स्थितियों में स्वयंसेवक के हृदय में उठने वाले भावों को भी स्वर प्रदान करते हैं और मार्ग पर निरंतर बढ़ते रहने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। उच्च प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन 11:20 से 12:20 बजे तक 'अर्थबोध' सत्र में विभिन्न सहगीतों का भावार्थ किया गया जिसमें स्वयंसेवकों ने गीतों की गहराई में उतरकर पूज्य तनसिंह जी के भावों के मोती अर्जित करने का प्रयास किया। 19 मई को 'कदम तुम्हारे' सहगीत पर चर्चा हुई जिसमें बताया गया कि हम भले ही काल की उपेक्षा करें लेकिन स्वयं को काल का शिकार बनने से नहीं बचा पाएंगे। क्षत्रिय जाति स्वयं युगनिमार्ता है लेकिन आज उसे अपनी शक्ति पर संशय हो गया है। हम अपने स्वधर्म और स्वभाव को भूल गए हैं इसलिए हमारे कदम कांप रहे हैं। हमें अपनी कमजोरियों को छोड़कर युग की मांग को पूरा करने के लिए कर्त्तव्य पालन में जुट जाना है। स्वधर्म की बलिवेदी पर हमें अपने सर्वस्व की बलि चढ़ानी होगी। 20 मई को 'देता रहे जीवन ज्योति' गीत पर चर्चा में बताया गया कि अपने आप को मिटा कर ही दूसरों को प्रकाश दिया जा सकता है। मार्ग में अनेक कठिनाइयां भी आएंगी, मन विचलित भी होगा लेकिन दीपक की भांति हमें निरंतर जलते रहना है। मन में बिना कोई अहंकार लाए निर्लिप्त भाव से अपने कर्म में लगे रहना है। अपनी शक्ति का संचय ना करके अभावों को सहते हुए हमें समाज में प्रेरणा की अलख जगानी है। 21 मई को 'दिया जले' सहगीत का अर्थबोध हुआ जिसमें बताया गया कि हम ईर्ष्या के कारण अपनी श्रेष्ठताओं को खो रहे हैं और नेष्टताओं को अपना रहे हैं। हमारे सामाजिक जीवन की धारा क्षुब्ध हो गई है, हमारी परंपराएं टूट रही हैं, ऐसे में हमें अपने स्वभाव, गुणों और विशेषताओं को पुनः याद करना होगा, आचरण में लाना होगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें उसी का अभ्यास करा रहा है। 22 मई

को 'जाग चेतना' गीत पर चर्चा में बताया गया कि अहंकार के कारण हमारा ज्ञान कुंठित हो जाता है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें अहंकार छोड़कर अपनी जिज्ञासा को तीव्र और उत्कट बनाना होगा। जब हमारे जीवन में भक्ति, त्याग, धर्म धारणा और सुप्त एकता का जागरण होगा तभी हम समाज को सत्य साधना में प्रवृत्त कर सकेंगे। 23 मई को 'हंसती है जग की होनी' गीत पर चर्चा में बताया गया कि होनहार या भाग्य को बदलना पुरुषार्थी के लिए ही संभव है। साहस और पुरुषार्थ से हीन व्यक्ति जब होनी बदलने की बात करते हैं तो वे हास्यास्पद बन जाते हैं। हमारे पूर्वजों ने स्वयं जाकर आफतों से टक्कर ली और मृत्यु में भी अमर जीवन को प्रतिष्ठित कर दिया। 24 मई को 'हृदय की आग' गीत पर चर्चा में कहा गया कि क्षात्र परंपरा चोरी से जीने अर्थात अपने आप को बचाने की भावना के साथ जीने को स्वीकार नहीं करती बल्कि अपने दायित्व के पालन के लिए मृत्यु तक को अंगीकार करने की बात करती है। हमारे समाज पर आज जो तरह - तरह के आक्षेप लगाए जाते हैं उनका उत्तर हम अपने कर्तव्य का पालन करके ही दे सकते हैं। काल की मांग को हमें पहचानना होगा और उस मांग को पूरी करने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा। 25 मई को 'चिता जल रही है' गीत के द्वारा साधना पथ में आने वाली चुनौतियों के बारे में बताया गया और कहा गया कि कर्तव्य पालन के मार्ग में हमें प्रणय के बंधन को

तोड़ना पड़ता है, त्याग और राग की कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है और अपनों के विरोध और असहयोग को भी सहन करना पड़ता है। 26 मई को 'अरमानों की दुनिया' गीत पर चर्चा में समझाया गया कि संघ मार्ग पर चलते हुए भाग्य चाहे हमारे विपरीत हो जाए, लेकिन हमारा आपसी प्रेम और बंधुत्व नहीं खोना चाहिए। हमारा संकल्प मजबूत होगा, संघ में निष्ठा दृढ़ होगी और कर्म प्रेरणा निरंतर बनी रहेगी तो ही हम इस कांटों भरे पथ पर सफलतापूर्वक चल सकते हैं। 27 मई को 'क्रांति का बजरा' गीत पर चर्चा में साम्यवाद, पूंजीवाद और समाजवाद का तुलनात्मक परिचय देते हुए बताया गया कि कोई भी क्रांति तब तक अधूरी है जब तक वह लोगों के जीवन को नहीं बदलती, उनके हृदय और विचारों को नहीं बदलती। श्री क्षत्रिय युवक संघ सहयोगी जीवन के रूप में ऐसी ही क्रांति को चरितार्थ करने का कार्य कर रहा है। 28 मई को 'प्यासे प्राणों की ज्योति' सहगीत पर चर्चा में बताया गया कि हमारा लक्ष्य अर्थात् क्षात्रधर्म ही हमारा सर्वस्व है। वही हमारा प्रण है और वही हमारा प्रेरणा स्रोत है। उस लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते रहें तो ही हमारा जीवन सार्थक बनेगा। इस सत्र में मातृशक्ति शिविर में कदम तुम्हारे, क्षात्र धर्म, देता रहे, हंसती है जग की होनी, अरमानों की दुनिया और कहो चुकाई कीमत किसने सहगीतों का भावार्थ करने का प्रयास किया गया।

समास्या में हुआ 'मेरी साधना' और समाज सम्बन्धी विवेचन

उच्च प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन प्रातः 8:45 से 9:45 बजे तक समास्या का सत्र रहा जिसमें 19 से 22 मई तक श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघ प्रमुख श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की पुस्तक 'मेरी साधना' के विभिन्न अवतरणों के माध्यम से संघ साधना के सोपानों पर चर्चा की गई। 23 से 27 मई तक विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा हुई एवं 28 मई को शंका समाधान का कार्यक्रम रखा गया। 19 मई को 'मेरी साधना' के अवतरण संख्या 1, 3, 5, 11, 15, 17 व 99 पर हुई चर्चा में बताया गया कि समाज के लिए कुछ करने का भाव ही हमें कर्म में प्रवृत्त करता है। प्रारंभ में हमारी इच्छाएं और महत्वाकांक्षाएं बहुत सी होती हैं और हमारे पास अनुभव और परीक्षण की कमी होती है जिसके कारण हमारे कर्म का वांछित परिणाम नहीं मिल पाता। फिर भी जो व्यक्ति कठिनाइयां पाकर भी निराश होकर कर्म नहीं छोड़ता वह अपने सही लक्ष्य को जान लेता है। स्वधर्म अर्थात कर्त्तव्य पालन ही हमारा वास्तविक लक्ष्य है और उसकी साधना का आधार हमारा समाज है। एक बार साध्य ज्ञान हो जाने पर साधक को अभ्यास की पुनरावृत्ति द्वारा दृढ़ता प्राप्त करनी चाहिए और नवीनता के लिए इधर-उधर भटकना बंद कर देना चाहिए। 20 मई को अवतरण संख्या 18, 21, 25, 27 व 94 पर चर्चा हुई जिसमें बताया गया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के साधक को कीचड़ में कमल की भांति निर्लिप्त और आसक्ति रहित होकर कर्मरत रहना चाहिए। आचरणहीन ज्ञानी संघर्ष से बचने हेतु अपने ज्ञान का दुरुपयोग करते हैं। संघर्ष से पीछे हटने पर जो अपकीर्ति होती है वह क्षात्र धर्म के साधक के लिए वरणीय नहीं

है। जीवन के समस्त लक्ष्यों और कर्तव्यों का समावेश क्षात्र धर्म में है। यह ज्ञान भक्ति और कर्म का संगम है। क्षात्र धर्म के पालन के लिए मां शक्ति से सदैव प्रकाश, जागृति और ज्ञान की प्रार्थना करते रहें। हमें सामूहिक रूप से क्षात्र धर्म पालन की साधना करते हुए ऐसे संघ शरीर का निर्माण करना है जिसमें बालक, युवा और प्रौढ़ अवस्था की सभी विशेषताएं जैसे - विश्वास, पवित्रता, इच्छा, क्रिया, ज्ञान और धैर्य आदि शामिल हों। 21 मई को अवतरण संख्या 61, 62, 66, 67 और 102 पर हुई चर्चा में बताया गया कि मन हमारी साधना का विकट शत्रु है जो हमें अपने साधना मार्ग से भटका देता है। मार्ग में आने वाली कठिनाइयां और विपरीत परिस्थितियां भी हमारे धैर्य की परीक्षा लेती है। लोभ, मोह, काम, क्रोध, मद, मत्सर आदि विकार विभिन्न रूपों में हमारे सामने आते हैं। धन, सौंदर्य और प्रणय की

बाधाएं भी मार्ग से भटकाने के लिए आती हैं। अनुभूत ज्ञान और चरित्र की सबलता से ही इन बाधाओं को निष्फल किया जा सकता है। साधना का दीप स्वयं को खाकर जलता है। इसलिए समाज को प्रकाश और मार्गदर्शन देने के लिए साधक को त्यागी, चरित्रवान और कर्मठ होना चाहिए। 22 मई को अवतरण संख्या 75, 77, 86, 103, 104, 105, 110 और 111 पर चर्चा हुई जिसमें बताया गया कि वर्तमान में राष्ट्रीय यज्ञ की वह ज्वाला, जिसे हमारे पूर्वजों ने अपने जीवन की आहुतियां देकर प्रज्वलित रखा था, क्षीण पड़ती जा रही है। इस महान परंपरा को जीवित रखने के लिए हमें अपने सर्वस्व की आहुति देनी होगी। यह साधना पथ तलवार की धार पर चलने के समान कठिन है इसलिए अंत तक चलते रहने का संकल्प जिसमें हो वही यहां टिक पाएगा। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

संपादकीय

विरोध, निष्क्रिय सलाह और सहयोग

कर्मशीलता में एक प्रबल, अकथनीय और उपेक्षा न कर पाने जैसा आकर्षण होता है। जिसके भी निकट से कर्मशील व्यक्ति के कदम गुजरते हैं, जो भी इन कदमों की ध्वनि को सुनता है, वह किसी न किसी रूप में उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। एक व्यक्ति की कर्मठता उसके संपर्क में आने वाले कुछ ही व्यक्तियों के जीवन को प्रभावित करती है तो किसी सामाजिक संस्था की कर्मठता पूरे सामाजिक जीवन अथवा उसके बड़े अंश में हलचल पैदा करने की क्षमता रखती है। किंतु इस प्रभाव का, इस हलचल का परिणाम क्या होगा, यह अनेक कारकों पर निर्भर करता है। उनमें से एक महत्वपूर्ण कारक है प्रभावित होने वाले व्यक्ति का दृष्टिकोण, स्वभाव और चिंतन। इनके आधार पर यदि हम विभाजन करें तो ऐसे प्रभावित होने वाले व्यक्तियों की तीन प्रकार की श्रेणी निश्चित की जा सकती है - विरोधी, निष्क्रिय सलाहकार और सहयोगी। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी कर्मठता प्रधान संस्था है जिसमें कर्म के माध्यम से ज्ञान और भक्ति के अवतरण का संपूर्ण दर्शन समाया हुआ है, इसलिए संघ की कर्मठता समाज में हलचल उत्पन्न करती है, समाज के जीवन को प्रभावित करती है और उस प्रभाव के फलस्वरुप उपरोक्त तीनों श्रेणियों के व्यक्ति संघ के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष संपर्क में आते हैं और अपने स्वभाव के अनुसार संघ की कर्मठतापूर्ण उपस्थिति के प्रति अपनी प्रतिक्रिया करते हैं। इस आलेख में हम इन श्रेणियों और उनकी प्रतिक्रियाओं के उद्गम, अभिव्यक्ति, परिणाम आदि का संक्षेप में विश्लेषण करने का प्रयत्न करेंगे जिससे संघ के लोकसंग्रह के कार्य हेतु आवश्यक चिंतन में सहयोग मिल सके।

प्रथम श्रेणी में वे व्यक्ति हैं जो संघ की कर्मठतापूर्ण यात्रा के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष संपर्क में आकर प्रभावित होते हैं और उस प्रभाव की प्रतिक्रिया में संघ के विरोधी बन जाते हैं। इनकी संख्या बहुत अधिक नहीं होती और न ही उनका विरोध स्थायी होता है क्योंकि उनके विरोध का कारण संघ की विचारधारा, दर्शन, प्रणाली आदि से तार्किक असहमति नहीं होता है, हालांकि ऊपरी तौर पर उन विरोधियों द्वारा यही कारण बताए जाते है जबकि उनके विरोध का वास्तविक उद्गम उनकी ईर्ष्याजनित महत्वाकांक्षाएं और अहंकार होता है। वस्तुतः वे कर्मठता के आकर्षण से प्रभावित होते हैं और उनकी महत्वाकांक्षा स्वयं भी वैसा आकर्षण पैदा करना चाहती है लेकिन उसके लिए आवश्यक कर्मठता जुटाने की क्षमता के अभाव में ईर्ष्या और अहंकार की नकारात्मक प्रवृत्ति उन्हें उस कर्मठता के स्रोत के विरोध के लिए प्रेरित करती है और वह उस विरोध के द्वारा अपनी ईर्ष्या और अहंकार को तुष्ट करने का असफल प्रयास करने लग जाते हैं। ऐसे विरोध की उपस्थिति कर्मठता की यात्रा में अत्यंत स्वाभाविक है। यद्यपि ऐसा विरोध कटु और बाधक होता है लेकिन उसमें महत्वाकांक्षा जैसे सक्रिय तत्व की उपस्थिति के कारण यह संभावना भी बनी रहती है कि कालांतर में ऐसे सक्रिय विरोधी में सकारात्मक चिंतन का उदय होने पर वह विरोधी से सहयोगी भी बन जाये। वहीं यह भी संभावना रहती है कि साथ चलने वाले सहयोगी में ईर्ष्या और अहंकार का महत्वाकांक्षा के साथ दुर्योग गठित हो जाए और वह विरोधी बन बैठे। इस प्रकार के विरोध की कुछ मात्रा प्रत्येक कर्मठतापूर्ण साधना के मार्ग में स्वाभाविक है और कुछ अर्थों में कर्मठता की प्रबलता और तीव्रता को बनाए रखने के लिए आवश्यक भी है इसलिए उसकी उपस्थिति कर्मवीरों के लिए चिंता योग्य नहीं होती।

द्वितीय श्रेणी है निष्क्रिय सलाहकारों की। कर्मठता से उत्पन्न आकर्षण से प्रभावित होने वालों में सर्वाधिक संख्या इसी श्रेणी के व्यक्तियों की होती है। ऐसे व्यक्ति कर्मठता के स्रोत की प्रशंसा भी करते हैं, उसे श्रेष्ठ और आवश्यक भी बताते हैं, उसके प्रति अपनी शाब्दिक निष्ठा व्यक्त करने में भी आगे रहते हैं, लेकिन सहयोग के रूप में उनके पास देने को एकमात्र वस्तु होती है - सलाह या सुझाव। ऐसे व्यक्ति अपने व्यवसायिक जीवन के किसी कार्यक्षेत्र में विशेष रूप से सक्रिय होते हैं और इसलिए एक विशिष्टता का भाव भी अपने में लेकर चलते हैं। उसी भाव के वशीभूत हो वे अन्यों को सलाह देने के लिए स्वयं को अधिकृत मान लेते हैं लेकिन जब ऐसे सलाहकारों से उन्हीं के व्यवसायिक कार्यक्षेत्र में सहयोग या कायारंभ के लिए निवेदन किया जाता है तो वे कदम पीछे खींच लेते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ में भी सलाह देने के लिए इस प्रकार के अनेकों सलाहकार आते हैं। कभी कोई पत्रकार बंधु समाज में विचारों के प्रसार द्वारा जागृति लाने के उपाय बताते हैं अथवा समाज के विरुद्ध दुष्प्रचार का प्रतिकार करते हुए समाज के पक्ष में नैरेटिव बनाने के लिए कार्य करने की सलाह देते हैं। लेकिन जब उनसे समाज के किसी समाचार या मुद्दे को समाचार माध्यमों में प्रसारित करने हेतु किसी प्रकार के सहयोग की बात कही जाती है तो विभिन्न प्रकार की विवशताएं गिनाकर असमर्थता जता देते हैं। कभी कोई अधिवक्ता अथवा न्यायिक सेवा से जुड़े व्यक्ति समाज के हितों की रक्षा के लिए कानूनी साधनों के प्रयोग की सलाह देते हैं लेकिन यदि उनसे समाज विरोधी कृत्य करने वालों के विरुद्ध विधिक कार्रवाई प्रारंभ करने के लिए कहा जाए तो वे पीछे हट जाते हैं। कभी कोई सरकारी अधिकारी या कर्मचारी समाज के कमजोर वर्ग तक सरकारी योजनाओं के लाभ पहुंचाने की सलाह देते हैं लेकिन जैसे ही उनसे अपने विभाग की योजनाओं को लेकर यह कार्य प्रारंभ करने को कहा जाए वैसे ही वे अपनी छवि की चिंता और समय का अभाव आदि परिस्थितियां बताने लगते हैं। इसी प्रकार से अनेक अन्य प्रकार के व्यक्ति अनेक प्रकार के सुझाव देते हैं लेकिन उन सुझावों के क्रियान्वयन में सहयोगी बनने के लिए स्वयं को प्रस्तुत नहीं करते। वास्तव में ऐसे व्यक्तियों की इस प्रतिक्रिया का मूल उनके छद्म अहंकार और भीरू स्वभाव में होता है। छद्मवेशी अहंकार के कारण एक ओर वे सुझाव देकर स्वयं को विशिष्ट और महत्वपूर्ण सिद्ध करने का प्रयास करते हैं और दूसरी ओर भीरूता के कारण स्वयं को सक्रिय भूमिका में लाने का साहस नहीं कर पाते। ऐसा करके वे कर्मठ व्यक्तियों पर अपनी इच्छाओं का भी बोझ लादना चाहते हैं और स्वयं पीछे रहकर बिना श्रम के अपने मंतव्य के पूरा होने की आशा रखते हैं। इस प्रकार के स्वभाव वाले व्यक्ति अपनी सलाहों और सुझावों को क्रियान्वित करना चाहते हैं लेकिन यह नहीं समझ पाते कि उनके स्वयं के इस कार्य में संलग्न हुए बिना उनके सुझाव सदैव मूल्यहीन ही बने रहेंगे।

तीसरी श्रेणी है उन व्यक्तियों की जो कर्मठता के प्रभाव में आकर स्वयं भी उस कर्मधारा में सहयोगी बन कर शामिल हो जाते हैं। सहयोगी वही बनता है जिसका चिंतन पूर्वधारणाओं, ईर्ष्या, अहंकार आदि से मुक्त हो। ऐसे व्यक्ति संघ की कर्मठता से जब प्रभावित होते हैं तो वे उस कर्मठता के स्रोत तक पहुंचकर उसके कारण, लक्ष्य आदि को समझने का प्रयास करते हैं। जब वे ईमानदारी पूर्वक उस कारण को, लक्ष्य को समझने का प्रयास करते हैं और पाते हैं कि संघ की कर्मठतापूर्ण यात्रा समाज के प्रति उनके चिंतन, आकांक्षाओं और स्वप्नों का प्रतिनिधित्व करती है तब उनमें कृतज्ञता का भाव जागृत होता है। कृतज्ञता का अनुभव ऋणी होने का अनुभव है और इसलिए कृतज्ञ व्यक्ति उस ऋण को चुकाने के लिए तत्पर होता है। कर्मठता का ऋण चुकाने का उपाय स्वयं कर्मठता ही है इसलिए ऐसा व्यक्ति स्वयं सहयोगी बनकर कर्मठता की उस यात्रा में शामिल हो जाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की यात्रा में इन तीनों प्रकार के व्यक्तियों की उपस्थिति सदैव बनी रहती हैं किंतु सच्चे अर्थों में और संघ की दृष्टि में तो केवल सहयोगी की ही उपस्थिति रहती है क्योंकि निरंतर चलते हुए इस कारवां में केवल सहयोगी ही साथ चलता है, विरोधी और निष्क्रिय सलाहकार तो मात्र किनारे खड़े रहते हैं और पीछे छूटते जाते हैं। इसलिए आएं, हम भी अपना आत्मपरीक्षण करें कि हम कहीं विरोधी या निष्क्रिय सलाहकार तो बन कर नहीं रह गए हैं या बनने की ओर अग्रसर तो नहीं हैं और यदि ऐसा है तो अपने चिंतन में, दृष्टिकोण में परिवर्तन लाएं और सक्रिय होकर सहयोगी बनने की ओर प्रवृत्त होवें।

दव में सामाजिक सद्भावना की अनुकरणीय पहल

जैसलमेर जिले के दव गांव में राजपूत समाज ने आर्थिक रूप से कमजोर मांगणियार परिवार की कन्या के विवाह का खर्च वहन कर सामाजिक सद्भावना का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। गांव के पीरदान सिंह, हाथी सिंह, गुलाब सिंह, भीम सिंह, समंदर सिंह, बाबू सिंह, छुग सिंह, दुर्जन सिंह, भूपाल सिंह, पदम सिंह, लाल सिंह शैतान सिंह आदि समाज बंधुओ ने अपनी ओर से आर्थिक सहयोग इकट्ठा कर गांव के करीम खान की पुत्री का विवाह संपन्न करवाया। सभी ग्रामवासियों ने इस पहल की सराहना की।

विभिन्न राजपूत सभाओं के चुनाव

भरतपुर के हनुमान मंदिर परिसर में स्थित श्री राजपूत धर्मशाला में राजपूत सभा के भरतपुर, धौलपुर और डीग जिलों के जिलाध्यक्षों के चुनाव 19 मई को संपन्न हुए। श्री राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई एवं केंद्रीय कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों की उपस्थिति में आयोजित इन चुनावों में भरतपुर से रेवेन्द्र सिंह पना, डीग से रविंद्र पाल सिंह परमार एवं धौलपुर से रामवीर सिंह परमार निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 19 मई को ही सवाई माधोपुर में भी जिलाध्यक्ष एवं महामंत्री के पदों हेतु चुनाव हुए जिनमें दीपक नरूका को चौथी बार जिलाध्यक्ष चुना गया एवं महेश पाल सिंह जादौन को जिला महामंत्री चुना गया। केंद्रीय पर्यवेक्षक दल के रूप में संगठन मंत्री अजय पाल सिंह पचकोडिया, गोपाल सिंह रोजदा आदि उपस्थित रहे।

दसवीं एवं बारहवीं कक्षा में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाली समाज की प्रतिभाएं

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा हाल ही में दसवीं एवं बारहवीं कक्षा के परिणाम घोषित किए गए हैं। इन परिणामों में समाज के अनेक छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट अंक प्राप्त किए हैं। इनमें से कुछ की सूचना पथप्रेरक कार्यालय में प्राप्त हुई है। अभी तक प्राप्त सूचना के अनुसार 90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले समाज के छात्र-छात्राओं की एक सूची यहां प्रकाशित की जा रही है। शेष सूची व जिन विद्यार्थियों की सूचना आगे प्राप्त होगी, उनका विवरण अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

कक्षा 10

नाम व पिता का नाम	गांव व जिला	कक्षा	प्राप्तांक प्रतिशत
विवेक देवड़ा पुत्री भवानी सिंह	भटाना (सिरोही)	10 (सीबीएसई)	92.40
कनक शेखावत पुत्री गोविंद सिंह	कातर छोटी (चुरू)	10 (गुजरात बोर्ड)	90.83
निहारिका पुत्री हरपाल सिंह चूड़ासमा	धोलेरा (अहमदाबाद)	10 (गुजरात बोर्ड)	93.00
भानुप्रताप महेचा पुत्र नरेंद्र सिंह	हरजी (जालौर)	10 (सीबीएसई)	95.20
शिवानी खंगारोत पुत्री कीर्ति वर्धन सिंह	केरिया बुजुर्ग (दूदू)	10 (सीबीएसई)	97.60
अक्षिता सिंह सोलंकी पुत्री शक्तिराज सिंह	कालेड़ा कंवरजी (अजमेर)	10 (सीबीएसई)	94.60
डिंपल राठौड़ पुत्री दशरथ सिंह	गागुडा (नागौर)	10 (गुजरात बोर्ड)	95.17
यशवर्धन सिंह भाटी पुत्र श्याम प्रताप सिंह भाटी	कोटड़ी (बालोतरा)	10 (सीबीएसई)	94.20
अमिता राठौड़ पुत्री भगवान सिंह राठौड़	जुसरी (डीडवाना कुचामन)	10 (सीबीएसई)	95.80
नैतिक सिंह शेखावत पुत्र राकेश सिंह	राजनौता (कोटपुतली)	10 (सीबीएसई)	96.20
केसरपाल सिंह पुत्र भगवान सिंह	कोराणा (जालौर)	10 (कर्नाटक बोर्ड)	97.28
पायल कंवर पुत्री केर सिंह देवल	करड़ा (जालौर)	10 (महाराष्ट्र बोर्ड)	91.00
यशवर्धन सिंह पुत्र पुरण सिंह देवड़ा	जोड़वास (जालौर)	10 (सीबीएसई)	90.60

कक्षा 12

नाम व पिता का नाम	गांव व जिला	कक्षा	प्राप्तांक प्रतिशत
खुशी शेखावत पुत्री दिलीप सिंह	ढ़ोलास (सीकर)	12 (सीबीएसई)	99.80
भावना नाथावत पुत्री गिरवर सिंह	इटावा भोपजी-जयपुर	12 (सीबीएसई)	98.80
देवश्री राठौड़ पुत्री चंद्र सेन राठौड़	दीपपुरा (नागौर)	12 (सीबीएसई)	95.20
कृष्णराजसिंह सिसोदिया पुत्र प्रवीणसिंह सिसोदिया	गांव - सटोडा (डूंगरपुर)	12 (सीबीएसई)	93.00
दक्षराज सिंह राठौड़ पुत्र चक्रवर्ती सिंह	आकोड़िया (ब्यावर)	12 (सीबीएसई)	92.40
प्रताप सिंह पुत्र राम सिंह	सोमेसरा (बाड़मेर)	12 (सीबीएसई)	92.00
अक्षिता चौहान पुत्री लक्ष्मण सिंह	मुली (जालौर)	12 (आरबीएसई)	94.40
मदन सिंह पुत्र भंवर सिंह शेखावत	सीलवा (बीकानेर)	12 (आरबीएसई)	90.80
अनामिका बीदावत पुत्री रविन्द्र सिंह बीदावत	परसनेऊ (चूरू)	12 (सीबीएसई)	94.60
प्रिया कंवर पुत्री श्रवण सिंह राठौड़	कसूम्बी (नागौर)	12 (आरबीएसई)	93.80
दिया चौहान पुत्री पुष्पराज सिंह	खरोड़िया (डूंगरपुर)	12 (आरबीएसई)	98.20
खुशबू कंवर पुत्री भगवत सिंह	जाखड़ी (जालौर)	12 (आरबीएसई)	91.00
धीरजपाल सिंह पुत्र नटवर सिंह देवड़ा	रतनपुर (जालौर)	12 (आरबीएसई)	90.20
नीलम सिंह पुत्र ईश्वर सिंह सोलंकी	सेवाड़ा (जालौर)	12 (आरबीएसई)	92.40
कोमल कंवर पुत्री माधो सिंह देवड़ा	मेंडक (जालौर)	12 (आरबीएसई)	94.80
नलिनी कंवर पुत्री महावीर सिंह	गलथनी (पाली)	12 (आरबीएसई)	91.20
जसवंत सिंह पुत्र उत्तम सिंह	पांचोटा (जालौर)	12 (आरबीएसई)	91.20
ममता कंवर पुत्री कल्याण सिंह	मंडवारिया (सिरोही)	12 (आरबीएसई)	92.00
तनवीर सिंह पुत्र विनोद सिंह	गुड़ा बालोतान-जालौर	12 (आरबीएसई)	96.60
किरण कंवर पुत्री सुरेन्द्र सिंह जोधा	केशवणा (जालौर)	12 (आरबीएसई)	92.20
चिंटा कंवर पुत्री गणपत सिंह	पांचला (जालौर)	12 (आरबीएसई)	92.60
हर्षवर्धन सिंह पुत्र राजवीर सिंह	पालासनी (जोधपुर)	12 (आरबीएसई)	90.00
हितेंद्र सिंह राठौड़ पुत्र विक्रम सिंह	सिराणा (जालौर)	12 (आरबीएसई)	93.20
रघुराज सिंह पुत्र ईश्वर सिंह	पांचला (जालौर)	12 (आरबीएसई)	93.40
कृष्णा कंवर पुत्री नरेंद्र सिंह परमार	बूगांव (जालौर)	12 (आरबीएसई)	91.60
सुमित्रा कंवर पुत्री राजेंद्र सिंह परमार	बूगांव (जालौर)	12 (आरबीएसई)	91.40
नीकु कंवर पुत्री उत्तम सिंह	मोरसीम (जालौर)	12 (आरबीएसई)	94.40
प्रेरणा कंवर पुत्री जसवंत सिंह देवड़ा	उथमण (सिरोही)	12 (आरबीएसई)	95.60
हर्षिता कंवर शेखावत पुत्री गजेंद्र सिंह	छोटा गुढ़ा (जयपुर)	12 (आरबीएसई)	94.40
पवन सिंह पुत्र दीप सिंह	कोटडी (जैसलमेर)	12 (आरबीएसई)	96.60

नगेन्द्र सिंह नाथावत बने अकादमिक परिषद के सदस्य

सीकर के लक्ष्मणगढ़ के टोडी महाविद्यालय के प्राचार्य नगेन्द्र सिंह नाथावत को पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय सीकर की अकादमिक परिषद का सदस्य नामित किया गया है। राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा उनकी नियुक्ति के आदेश अप्रैल 2025 में जारी किए गए। उनका कार्यकाल 2 वर्ष का रहेगा।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हर्षिता कंवर शेखावत सुपुत्री श्री **गजेंद्र सिंह शेखावत**

छोटा गुढ़ा (जयपुर) के कक्षा 12 में 94.40 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : समस्त परिवारजन

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

दिया चौहान सुपुत्री श्री **पुष्पराज सिंह**

खरोड़िया (डूंगरपुर) द्वारा कक्षा 12 (आरबीएसई) में 98.20 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : समस्त परिवारजन

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

विवेक देवड़ा सुपुत्री श्री **भवानीसिंह**

भटाना (सिरोही) के कक्षा 10 (सीबीएसई) में 92.40 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : समस्त परिवारजन

प्रभात संदेश

उच्च प्रशिक्षण शिविर में 19, 20, 21 व 22 मई को माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने प्रातःकालीन वंदना के पश्चात प्रभात संदेश के रूप में आशीर्वचन प्रदान किया। 24 से 28 मई तक माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास द्वारा प्रभात संदेश दिया गया। सभी का संक्षिप्त एवं संपादित अंश तिथिवार प्रस्तुत हैः

19 मईः क्षत्रिय के रूप में इस संसार के प्रति हमारा उत्तरदायित्व अन्य सभी से अधिक है। पीड़ित मानवता की सहायता और रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। अपने इस कर्तव्य को पूरा करना ही भगवान के प्रति हमारी कृतज्ञता होगी। संघ के स्वयंसेवक के रूप में आपको श्रेष्ठ व्यवहार करना है क्योंकि अन्य लोग आपको देख रहे हैं और वे आपका अनुकरण करेंगे।

20 मईः इस शिविर में आपको जो प्रशिक्षण दिया जा रहा है उसका प्रभाव जीवन व्यापी है। लेकिन वह सार्थक तभी होगा जब आप अंतरावलोकन करेंगे। अपने आपको बार-बार जांचने पर ही अपनी भूल अथवा कमी पता चलती है। इसलिए अपने भीतर सदैव देखते रहें कि यहां का शिक्षण आपके आचरण को श्रेष्ठ बना रहा है या नहीं। जो सबके लिए कार्य करे, वही देवताओं की भांति श्रेष्ठ बनता है। इसलिए अपने जीवन को सभी के लिए उपयोगी बनाएं और सबके हित में कार्य करें।

21 मईः श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर में हम ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते हैं। ज्ञान प्राप्त करने के लिए भगवद्गीता में तीन शर्तें बताई गई हैं। वे हैं - श्रद्धावान होना, तत्पर होना और संयतेन्द्रिय होना अर्थात इंद्रियों पर नियंत्रण होना। अभ्यास के द्वारा हम ये तीनों विशेषताएं अपने भीतर ले आएं, तभी हमें वह ज्ञान प्राप्त होगा जो संघ हमें देना चाहता है।

22 मईः ईशोपनिषद का प्रथम श्लोक तनसिंह जी को बहुत प्रिय था। इस श्लोक में बताया गया है कि परमात्मा का वास पूरे अस्तित्व में है। इसलिए संसार में जो कुछ भी दिखाई देता है, सब उसी का है। हम उस पर गिद्ध दृष्टि न रखें बल्कि त्यागपूर्ण जीवन जीते हुए उस सब का सदुपयोग करें।

24 मईः यहां शिविर में जो कुछ भी शिक्षण हम ले रहे हैं वह सार्थक तभी होगा जब हमारे जीवन में अनुशासन आएगा। अनुशासन में आदेश का नहीं बल्कि आज्ञा पालन का भाव है। इसीलिए यहां जो कुछ भी आपको करने के लिए कहा जाता है वह आदेशात्मक नहीं बल्कि उपदेशात्मक भाषा में कहा जाता है। अनुशासन से ही हमारे अंदर का एकात्म तत्व प्रदर्शित होता है।

25 मईः गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि चारों वर्णों की सृष्टि उन्होंने ही गुण कर्म के आधार पर की है। वर्तमान में सभी वर्ण अपने निश्चित किए हुए कर्तव्य को भूल गए हैं इसीलिए संसार पतन की ओर जा रहा है। जिस ब्राह्मण वर्ण का उत्तरदायित्व अन्य तीनों वर्णों को कर्तव्य का पाठ पढ़ाना था वह खुद ही अपना दायित्व भूल गया है। इसलिए हमें किसी और की प्रतीक्षा न करते हुए स्वयं ही अपने कर्तव्य का बोध करके उसके पालन में लग जाना चाहिए।

26 मईः संस्कृति का निर्माण व्यक्तिगत महानता के कार्यों से नहीं बल्कि सामूहिक रूप से किए गए श्रेष्ठ कृत्यों से होता है। परशुराम ने पिता की आज्ञा पर माता का वध किया लेकिन समाज ने उस कृत्य को मान्यता नहीं दी, इसीलिए वह कृत्य भारतीय संस्कृति का अंग नहीं है। भारतीय संस्कृति या क्षात्र संस्कृति संकुचित नहीं है, अपितु सर्व कल्याणकारी है।

27 मईः समाज जागरण के कार्य में इतिहास का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। हमारा इतिहास हमारी थाती है लेकिन यह केवल गर्व का विषय नहीं है। इतिहास हमारा प्रेरणास्रोत होने के साथ हमारा शिक्षक भी है। हमारे पूर्वजों के महान कार्यों से हम प्रेरणा लें लेकिन साथ ही इतिहास में हुई वे गलतियां जिनके कारण हमारा समाज पतन की राह पर चल पड़ा, उन्हें पहचानने और पुनः न दोहराने की सावधानी रखना भी आवश्यक है।

28 मईः संकल्प में वह शक्ति है जिससे कुछ भी होना संभव है। हमारे सभी कर्मों के पीछे संकल्प की शक्ति ही विद्यमान होती है। इस शिविर में आपके हृदय में भी जो संकल्प जगा है, उस संकल्प को सदैव जागृत रखें और दृढ़ता पूर्वक उसका पालन करें।

बौद्धिक सत्र में संघदर्शन को किया हृदयंगम

उच्च प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन 3:30 से 5:40 बजे का समय बौद्धिक सत्र का रहा जिसमें शिविरार्थियों द्वारा लगभग सवा दो घंटे तक एकाग्रचित्त होकर श्री क्षत्रिय युवक संघ के दर्शन को हृदयंगम किया गया। संघ के अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा वाचिक रूप में दिए गए प्रवचनों के दौरान शिविरार्थियों ने संघ के आधारभूत दर्शन को जानने के साथ ही लंबे समय तक एक आसन में स्थिर होकर बैठने और चित्त को एक विषय पर एकाग्र करने का अभ्यास भी किया। बौद्धिक सत्र में दिए जाने वाले प्रवचन मूल रूप में पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा शिविरों में दिए गए प्रवचन हैं जिनमें उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के आधारभूत दर्शन और उसके तार्किक आधार को स्पष्ट किया। इन प्रवचनों को सर्वप्रथम श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेडा द्वारा संकलित किया गया। शिविर के 45 घंटों को तीन भागों में बांटकर तीन अलग-अलग स्थानों पर एक ही समय में बौद्धिक दिए गए। 19 मई को 'हमारा उद्देश्य और मार्ग' विषय पर बौद्धिक दिया गया जिसमें बताया गया कि हमारा जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ है इसलिए हमारे जीवन का हेतु क्षात्रधर्म का पालन करना है। यह हमारे स्वभाव और वंशानुगत गुणों के अनुकूल है। यह हमारा जन्मजात उद्देश्य है और यही श्री क्षत्रिय युवक संघ का भी उद्देश्य है। इस उद्देश्य को हम अपना बनाकर चलें तो हमारा जीवन प्रेरणास्पद, व्यवस्थित और सुंदर बन जाएगा। क्षात्रधर्म पालन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संघ ने वर्तमान युग के अनुकूल सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली को अपने मार्ग के रूप में अंगीकार किया है। यह उर्ध्वगामी साधना का मार्ग है। 20 मई को 'लोकसंग्रह' विषय पर हुए बौद्धिक में बताया गया कि संसार में अनेक प्रकार की शक्तियां हैं जैसे - शारीरिक बल, साधन बल, मनोबल, बुद्धिबल, जनबल आदि। इनमें से जनबल के निर्माण का ही एक रूप है लोकसंग्रह। क्षात्रधर्म पालन के लिए बल की आवश्यकता है और वह बल युग के अनुकूल होना चाहिए। वर्तमान युग में संगठन ही शक्ति है। इसलिए लोक संग्रह आवश्यक है। लोकसंग्रहकर्ता में ध्येयनिष्ठा का गुण आवश्यक है साथ ही उसका जीवन तपोमय होना चाहिए। 21 मई को 'अधिकारी साधक' विषय पर हुए प्रवचन में बताया गया कि संघ का उद्देश्य महान है और उस तक पहुंचने का सरल मार्ग भी उपलब्ध है लेकिन वे तब तक महत्वहीन रहते हैं जब तक कोई उस मार्ग पर पर चलने वाला न हो। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मार्ग पर चलने के लिए भी स्वयंसेवक में कुछ अनिवार्य विशेषताएं होनी आवश्यक हैं। ये हैं रक्त की पवित्रता, स्वेच्छा, उत्साह, निर्दोष विनिमय, द्वेषरहितता और आकूतन की समानता। 22 मई को 'हमारा ध्वज' विषय का बौद्धिक हुआ जिसमें बताया गया कि निराकार उपासना प्रत्येक व्यक्ति के लिए सहज नहीं है इसीलिए सामान्य व्यक्ति को साकार प्रतीक की आवश्यकता होती है जिसमें वह अपनी श्रद्धा को दृढ़ कर सके। पूज्य केसरिया ध्वज हमारी संस्कृति और परंपरा का प्रतीक है जिसमें हमारे पूर्वजों के बलिदानों और क्षात्रधर्म का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। ध्वज ही संघ का सर्वोच्च नेता है और हमें भी सदैव उसके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए। 23 मई को 'जीवित समाज' विषय पर बौद्धिक हुआ जिसमें बताया गया कि वही समाज जीवित है जो अपने ऊपर होने वाले अत्याचार और अन्याय का प्रतिकार करता है। जिस समाज में स्वधर्म की मान्यता और सांस्कृतिक मान्यताएं समाप्त हो जाती हैं वह समाज भी समाप्त हो जाता है। हम जीवित समाज के लक्षणों के दृष्टिकोण से हमारे राजपूत समाज की वर्तमान स्थिति पर चिंतन करें तो पाएंगे कि हमारा समाज जीवित तो है लेकिन अस्वस्थ है। इस अस्वस्थता को दूर करके समाज को पुनः स्वस्थ बनाने के लिए ही श्री क्षत्रिय युवक संघ कर्मरत है। 24 मई को 'अनुशासन' विषय पर प्रवचन में बताया गया कि अनुशासन का अर्थ है शासन के पीछे चलना। अनुशासन से ही संगठित शक्ति का निर्माण हो सकता है। संघ जिस प्रकार का लोकसंग्रह करना चाहता है वह अनुशासित व्यक्तियों से ही संभव है। अनुशासनहीनता आने पर कोई भी संगठन अल्पकाल में ही समाप्त हो जाता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

पूज्य तनसिंह... जिनमें जागरण गीत, प्रातःकालीन वंदना, प्रातः के समय संघर्षपूर्ण खेल, सामाश्य (द्वितीय संघप्रमुख श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की पुस्तक 'मेरी साधना' पर चर्चा), अर्थबोध (पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीतों पर चर्चा), बुद्धि प्रधान खेल, बौद्धिक सत्र में संघदर्शन के मूलभूत सिद्धांतों पर प्रवचन), सायंकालीन चुस्ती फुर्ती वाले खेल, सायंकालीन प्रार्थना, घटचर्चा, लोकरंजक रात्रिकालीन कार्यक्रम (अंत्याक्षरी, विनोद सभा, शास्त्रार्थ आदि) शामिल है। इन सभी गतिविधियों के माध्यम से संघदर्शन का व्यावहारिक अभ्यास शिविर में करवाया गया। 23 मई से लगभग 40 शिविरार्थी और पूर्व अनुमति के साथ शिविर में शामिल हुए।

(पृष्ठ छह का शेष)

बौद्धिक सत्र... इसीलिए संघ की कार्य प्रणाली में अनुशासन का गुण विकसित करने का विशेष ध्यान रखा जाता है। 25 मई को 'उत्तरदायित्व' के बारे में समझाते हुए कहा गया कि उत्तरदायित्व का बोध कृतज्ञता की भावना से जन्मता है। समाज से हमें जो कुछ प्राप्त हुआ है उसका अनुभव करने पर समाज के प्रति कृतज्ञता का भाव हृदय में जगता है और उस भाव के अनुरूप समाज के ऋण से उऋण होने के लिए हम जब कर्मशील होते हैं, वही उत्तरदायित्व के बोध का जागरण है। 26 मई को 'हमारी संस्कृति' विषय पर प्रवचन में बताया गया कि भारतीय संस्कृति के महान् जीवन मूल्यों के निमार्ता क्षत्रिय ही रहे हैं, इसलिए यह हमारी अपनी संस्कृति है। आज जब भारतीय संस्कृति पर भीतर और बाहर से कुठाराघात हो रहे हैं तब उसकी रक्षा करने का दायित्व हमारा ही है। इसके लिए हमें उन मूल्यों और आदर्शों को अपने आचरण में ढालना होगा तभी हम अन्यों को भी उन आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दे सकेंगे। 27 मई को 'हमारा ऐतिहासिक अंतरावलोकन' विषय पर बौद्धिक हुआ जिसमें क्षत्रिय जाति के उज्ज्वल और गौरवशाली इतिहास से शिविरार्थियों को परिचित कराया गया और बताया गया कि इतिहास मात्र गर्व करने की वस्तु नहीं है बल्कि उसकी मुख्य भूमिका शिक्षक और प्रेरणास्रोत की है। अपने इतिहास में हुए श्रेष्ठ कार्यों से हम प्रेरणा लेकर वर्तमान में भी श्रेष्ठ कार्य करें, साथ ही इतिहास में हुई भूलों से सीख लेते हुए उन भूलों को दोहराने से बचें। 28 मई को 'नेतृत्व' विषय पर प्रवचन में बताया गया कि श्रेष्ठ नेतृत्व वही है जिसे आज्ञा देने की आवश्यकता ही ना पड़े और उसकी इच्छा को ही आज्ञा समझ कर उसका पालन किया जाता हो। ऐसा तभी हो सकता है जब नेतृत्वकर्ता का आचरण श्रेष्ठ हो और उससे सभी अनुगामियों को प्रेरणा प्राप्त होती हो। सच्चा नेतृत्व वही है जो भविष्य के नेतृत्व का निर्माण करने में ही अपनी सफलता समझता हो। इस सत्र में मातृशक्ति शिविर में ध्येय, मार्ग, लोकसंग्रह, जीवित समाज के लक्षण, नारी के दूषण व भूषण, गौरवशाली इतिहास आदि विषयों पर प्रवचन हुए।

(पृष्ठ तीन का शेष)

समस्या में.... साधना क्षेत्र में त्याग ही हमारा सच्चा मित्र है। हमारी साधना का दीप सदैव जलता रहे और बुझने से पूर्व अपने जैसे सहस्त्रों साधकों का दीप जला दे, यही साधना की सफलता है। साधना द्वारा ऐसी अखंड और अनंत शक्ति का हम निर्माण करें जिससे गांव-गांव, नगर-नगर में चेतना का प्रकाश फैल जाए। ऐसा होने पर समस्त बाधाएं चूर-चूर हो जाएंगी और यही हमारी साधना के स्वरूप की चरम सीमा होगी। 23 मई को 'आधुनिक वातावरण से मेरा बचाव' विषय पर चर्चा की गई जिसमें बताया गया कि वर्तमान में आधुनिकता के प्रभाव में हमारे जीवन मूल्यों में ह्रास हो रहा है। ऐसे में हमें अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपनी वेशभूषा को बचाने का प्रयास करना होगा। अपने खान-पान को शुद्ध व सात्विक बनाना होगा, अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करना होगा, सद्साहित्य का अध्ययन करना होगा और अच्छी संगति बनाए रखनी होगी। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि हमें यह आत्म चिंतन विकसित करना होगा कि क्या सही है और क्या गलत, क्या ग्रहण करने योग्य है और क्या त्यागने योग्य है। इसके लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा श्रेष्ठतम माध्यम है। 24 मई को 'परिवार, समाज व राष्ट्र में मेरी भूमिका' में बताया गया कि परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण व्यक्तियों से ही होता है। इसलिए यदि व्यक्ति का चरित्र श्रेष्ठ बनेगा तो परिवार, समाज और राष्ट्र भी श्रेष्ठ बनेंगे। परिवार के हित के लिए व्यक्ति को अपना हित, समाज के हित के लिए परिवार को अपना हित और राष्ट्र के हित के लिए समाज को अपना हित त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस प्रकार के त्याग के आधार पर ही किसी महान संस्कृति का निर्माण हो सकता है। 25 मई को 'सामाजिक बुराइयां व कुरीतियां' विषय पर चर्चा में बताया गया कि हमारे समाज में अनेक प्रकार की बुराइयां और कुरीतियां वर्तमान में प्रचलित हैं जिनमें टीका-दहेज, मृत्युभोज, नशे की प्रवृत्ति, दिखावा, अपव्यय, तलाक आदि शामिल हैं। मोबाइल और सोशल मीडिया की लत भी एक बुराई बन रही है। इन सभी बुराइयों को दूर करने के लिए हमें स्वयं से सुधार प्रारंभ करना होगा। हम इन बुराइयों से दूर रहें, अपने परिवार को भी दूर रखें और समाज में भी इनसे दूर रहने की प्रेरणा पैदा करें। 26 मई को 'हमारी संस्कृति व रीति रिवाज' पर चर्चा हुई जिसमें क्षत्रिय संस्कृति की श्रेष्ठता के बारे में बताया गया। सोलह संस्कारों के बारे में भी जानकारी दी गई। 27 मई को 'एक स्वयंसेवक के रूप में मेरी दिनचर्या' पर चर्चा में आदर्श दिनचर्या के बारे में बताते हुए कहा गया कि सूर्योदय से पूर्व उठना, शरीर की शुद्धि, उपासना, श्रम, सेवा, स्वाध्याय, चिंतन-मनन, मौन और समाधि हमारी दिनचर्या के अंग होने चाहिए। 28 मई को शंका समाधान का कार्यक्रम रखा गया जिसमें शिविरार्थियों द्वारा रखी गई विभिन्न प्रकार की जिज्ञासाओं का समाधान अनुभवी शिक्षकों द्वारा किया गया। इस सत्र में मातृशक्ति शिविर में 23 मई को आपसी परिचय का कार्यक्रम हुआ। 24, 25 व 26 मई को 'मेरी साधना' पुस्तक के अवतरणों पर चर्चा हुई। 27 मई को टूटते सम्बन्ध, बिखरते परिवार व संघ' विषय पर चर्चा हुई। 28 मई को शंका समाधान का कार्यक्रम हुआ।

साधक की समस्याओं और उनके समाधानों का किया अन्वेषण

श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना के साधक के मार्ग में आने वाली विविध प्रकार की समस्याओं के समाधान हेतु पूज्य श्री तनसिंह जी ने साधक की समस्याएं पुस्तक लिखी। उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान पुस्तक के विभिन्न अध्यायों पर क्रमवार चर्चा की गई। प्रथम अध्याय 'महत्वाकांक्षा का नासूर' पर चर्चा में बताया गया कि महत्वाकांक्षा एक प्रेरक शक्ति है जो हमें कर्म में प्रवृत्त करती है। महत्वाकांक्षा अपने आप में कोई समस्या नहीं है लेकिन जब वह सामाजिक महत्वाकांक्षा के साथ टकराने लगे तब वह समस्या बनती है। ना तो महत्वाकांक्षा का सर्वथा निरोध ही उचित है और ना उसको स्वच्छंद छोड़ देना ही सही तरीका है बल्कि व्यक्ति की महत्वाकांक्षा को सामाजिक महत्वाकांक्षा में नियोजित करना ही सही मार्ग है। दूसरे अध्याय 'रूढ़िगत साधना' में बताया गया कि साध्य या लक्ष्य देश, काल परिस्थिति से निरपेक्ष हो सकता है लेकिन साधना युगानुकुल होनी आवश्यक है। तीसरे अध्याय 'साधन का हठ' में बताया गया कि साधना सदैव गतिमान होती है इसलिए उसके किसी एक अंग पर आवश्यकता से अधिक आग्रह साधक के लिए समस्या बन जाता है। चौथे अध्याय 'अहं के नए रूप' में छद्मवेश में आने वाले अहंकार को पहचानने और उससे बचने के लिए विनय और अकिंचनता के भाव का सृजन करने की बात कही गई। पांचवें अध्याय 'सुरक्षा का भय' में निर्मूल और यथार्थ भय का अंतर समझाया गया। छठे अध्याय 'सुखात्मक दुर्बलताएं' पर चर्चा में आत्म प्रदर्शन, काम और हंसी की प्रवृत्तियों का विश्लेषण संघ की साधना के दृष्टिकोण से किया गया।

तरलोक सिंह चौहान और आशुतोष कुमार सिंह बने मुख्य न्यायाधीश

हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के रोहड़ू क्षेत्र के मूल निवासी तरलोक सिंह चौहान झारखंड उच्च न्यायालय के नए मुख्य न्यायाधीश होंगे। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम की 26 मई को हुई बैठक में उनके नाम की सिफारिश की गई। चौहान ने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से कानून की डिग्री प्राप्त की और 1989 में वकालत प्रारंभ की। वर्तमान में वे हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में कार्य कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने गुवाहाटी उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में आशुतोष कुमार सिंह के नाम की सिफारिश की है जो वर्तमान में पटना उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में कार्य कर रहे हैं।

अहमदाबाद शहर प्रांत की बैठक आयोजित

मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद शहर प्रांत में 13 मई को अहमदाबाद शहर में निवासरत स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों की एक बैठक शहर के मेमनगर क्षेत्र में रखी गई। बैठक में अहमदाबाद शहर में संघ कार्य के विस्तार को लेकर चर्चा की गई। इस हेतु प्रांत के विभिन्न क्षेत्रों में संपर्क यात्राएं आयोजित करने की योजना बनाई गई एवं शाखाओं की संख्या बढ़ाने पर भी चर्चा की गई। शहर में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के आयोजन का भी निर्णय लिया गया। कार्यक्रम में संभाग प्रमुख बटुक सिंह काणेटी, मनोज सिंह चूड़ी सहित अन्य सहयोगी उपस्थित रहे।

वीरेंद्र सिंह बस्तवा को प्रतिहार इतिहास पर शोध में डॉक्टरेट

जोधपुर जिले की बालेसर तहसील के बस्तवा गांव के निवासी वीरेंद्र सिंह इंदा ने 'प्रतिहारों के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (9वीं से 11वीं शताब्दी)' विषय पर शोधकार्य किया जिसके परिणाम स्वरूप जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की डिग्री प्रदान की गई।

कुणघेर शाखा की वर्षगांठ मनाई

उत्तर गुजरात संभाग के कुणघेर गांव में लगने वाली वीरवर अमर सिंह राठौड़ साप्ताहिक शाखा की प्रथम वर्षगांठ 12 मई को मनाई गई। शाखा विस्तार प्रमुख शैलेन्द्र सिंह कुणघेर ने शाखा में उपस्थित बालकों से चर्चा कर संघ के शिविरों में भाग लेने की बात कही।

रावलगढ़ में नशामुक्त विवाह की पहल

जोधपुर जिले के बालेसर क्षेत्र के रावलगढ़ गांव के निवासी भगवान सिंह इंदा पुत्र मगसिंह के विवाह आयोजन को पूर्णतया नशामुक्त रखकर अनुकरणीय पहल की गई। विवाह में टीका दस्तूर भी नहीं रखा गया। इस नशामुक्त आयोजन के लिए केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने भी दूल्हे के पिता मगसिंह को पत्र लिखकर इस पहल की सराहना की। भगवान सिंह रावलगढ़ श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक है।

सनिष कुमार सिंह को भारतीय वन सेवा परीक्षा में आठवां स्थान

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के गहमर गांव के निवासी सनिष कुमार सिंह पुत्र भीम सिंह संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय वन सेवा परीक्षा 2024 में अखिल भारतीय स्तर पर आठवां स्थान प्राप्त कर भारतीय वन सेवा अधिकारी के पद हेतु चयनित हुए हैं।

गिरवर सिंह जालेऊ को मातृशोक

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक गिरवर सिंह जालेऊ की माताजी **श्रीमती अनोप कंवर** धर्मपत्नी श्री हरि सिंह जी का देहावसान 16 मई 2025 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

श्रीमती अनोप कंवर

अर्जुन सिंह बारेवडा के दादोसा का निधन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक अर्जुन सिंह बारेवडा के दादोसा **श्री लक्ष्मण सिंह जी** का देहावसान 19 मई 2025 को हो गया। लक्ष्मण सिंह जी के पुत्र नारायण सिंह बारेवडा भी सिरोही जिले में संघ के सहयोगी हैं। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

श्री लक्ष्मण सिंह जी

उत्साह पूर्वक मनाई सम्राट पृथ्वीराज चौहान की जयंती

सम्राट पृथ्वीराज चौहान की जयंती 16 मई को विभिन्न स्थानों पर उत्साह पूर्वक मनाई गई। हरिद्वार के बहादराबाद में चौहान क्षत्रिय महासभा के तत्वावधान में महान भारतीय सम्राट पृथ्वीराज चौहान की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं ने सम्राट पृथ्वीराज की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। वक्ताओं ने कहा कि पृथ्वीराज चौहान का जीवन हमें राष्ट्र की रक्षा, स्वाभिमान और साहस की प्रेरणा देता है। उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले के गजरौला शहर में भी सम्राट पृथ्वीराज चौहान की मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक संगीता चौहान, पूर्व मंत्री मदन चौहान, महेंद्र सिंह, वीर सिंह, भगत सिंह आदि ने कहा कि पृथ्वीराज वीरता के साथ ही क्षमा और दया के प्रतीक थे। वे हमारे इतिहास के महा-नायकों में से एक हैं। जयंती के उपलक्ष्य में नगर में शोभायात्रा भी निकाली गई जिसका जगह-जगह फूलों से स्वागत किया गया। उत्तरप्रदेश में उन्नाव के हसनगंज

में स्थित आरएस लॉन में भी अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के तत्वावधान में सम्राट पृथ्वीराज की जयंती मनाई गई। महासभा के जिला अध्यक्ष बृजेंद्र सिंह दीप ने सम्राट पृथ्वीराज के शौर्य और बलिदान के बारे में बताया। सभी उपस्थित समाज बंधुओ ने पृथ्वीराज जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। दिल्ली में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के तत्वावधान में सम्राट पृथ्वीराज चौहान की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम को अजय राठौड़, अर्जुन राठौड़, ओमवीर सिंह वैदिक आदि ने संबोधित किया और सम्राट पृथ्वीराज को महान वीर और क्षमावान शासक बताते हुए उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। झुंझुनूं जिले के खेतड़ी क्षेत्र के ढाणी मीनावली गांव में भी 16 मई को पृथ्वीराज जी की जयंती करणी सेना द्वारा मनाई गई। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र सिंह फौजी, राजेश सिंह आदि वक्ताओं ने पृथ्वीराज चौहान की महानता को नमन किया और कहा कि मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले महापुरुष हम सभी के लिए आदरणीय हैं। उनसे सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर संस्था के कार्यकर्ता व स्थानीय समाजबंधु उपस्थित रहे।

श्री हनवंत राजपूत छात्रावास में त्रिलोकसिंह सम्मानित

जोधपुर स्थित श्री हनवंत राजपूत छात्रावास में श्री हनवंत एजुकेशन सोसाइटी के तत्वावधान में 13 मई को प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ जिसमें नव चयनित आईएएस त्रिलोक सिंह करणोत को सम्मानित किया गया। जोधपुर जिले के भाखरी गांव के निवासी त्रिलोक सिंह ने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा 2024 में बीसवां स्थान प्राप्त किया था। कार्यक्रम में उपस्थित युवाओं को संबोधित करते हुए त्रिलोक सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों को अपना लक्ष्य निश्चित करके तैयारी करनी चाहिए और यदि असफलता मिले तो उससे बिना घबराए लगातार प्रयास जारी रखना चाहिए। सफलता अवश्य मिलेगी। उन्होंने तैयारी के समय के अपने अनुभव भी साझा किए एवं प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी के संबंध में छात्रों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। श्री हनवंत एजुकेशन सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ शिव सिंह राठौड़ ने कहा कि त्रिलोक सिंह ने प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर 20वाँ स्थान प्राप्त कर अपने परिजनों और क्षेत्रवासियों को गौरवान्वित किया है। छात्रों को त्रिलोक सिंह से प्रेरणा लेकर कठिन परिश्रम के साथ अध्ययन करना चाहिए। ईश्वर सिंह भाटा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में छात्रावास कार्यकारिणी के सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सहयोगियों ने संघदर्शन किया

उच्च प्रशिक्षण शिविर में 25 मई को सायंकालीन वंदना के समय उदयपुर में रहने वाले संघ के सहयोगियों का स्नेहमिलन रखा गया। कार्यक्रम में माननीय संघप्रमुख श्री ने उपस्थित सहयोगियों और समाजबंधुओ से संवाद करते हुए कहा कि सहयोग की अनेक श्रेणियां होती हैं। इनमें धन का सहयोग सबसे निचली श्रेणी में आता है और हमारा सक्रिय सहयोग अर्थात हमारा स्वयं का संघ से जुड़ना श्रेष्ठतम श्रेणी का सहयोग है। आप अपने परिवार के बालकों को संघ के साथ जोड़कर और अन्य समाजबंधुओ से भी ऐसा ही निवेदन करके भी संघ का सहयोग कर सकते हैं। नाथद्वारा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़ भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि हमें अपनी पहचान को बनाए रखना होगा। क्षत्रिय होने के सही अर्थ को हमें समझना होगा और उसके अनुरूप जीवन जीना होगा। संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्य प्रणाली के बारे में बताया। बीएन संस्थान के चेयरपर्सन शिव सिंह सारंगदेवोत, प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह राठौड़, अतिरिक्त जिला कलेक्टर दीपेंद्र सिंह राठौड़, भाजपा जिला अध्यक्ष गजपाल सिंह राठौड़ सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

चित्तौड़गढ़ में राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

चित्तौड़गढ़ स्थित जौहर भवन में 13 मई को राजपूत स्नेहमिलन और प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए चित्तौड़गढ़ विधायक चंद्रभान सिंह आक्या ने कहा कि समाज की प्रतिभाएं ही समाज का भविष्य हैं। उनका प्रोत्साहन करने के साथ-साथ हमें उनका भविष्य के लिए मार्गदर्शन भी करना चाहिए। इसके लिए हमें सामाजिक रूप से संगठित होना होगा। समाज में आपसी सहयोग की भावना को मजबूत करने के लिए सभी को मिलकर कार्य करना चाहिए। कार्यक्रम में नीलकंठ महादेव मंदिर के महंत जगन्नाथ भारती, संस्था की कार्यकारी अध्यक्ष शीला गोगामेड़ी, योगेंद्र सिंह कटार, युग प्रताप सिंह हमीरगढ़ सहित संस्था के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। समारोह के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाली समाज की 76 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

प्रदीप शेखावत बने हरियाणा के मुख्य सूचना आयुक्त

झुंझुनू जिले के टांई गांव के निवासी प्रदीप शेखावत को हरियाणा सरकार द्वारा मुख्य सूचना आयुक्त के पद पर नियुक्त किया गया है।

इससे पूर्व हरियाणा सरकार में सूचना आयुक्त के पद पर सेवारत शेखावत के मुख्य सूचना आयुक्त के रूप में नियुक्ति के आदेश 16 मई को हरियाणा सरकार द्वारा जारी किए गए एवं इसी दिन उन्होंने शपथ ग्रहण कर पद संभाला। वरिष्ठ पत्रकार रहे शेखावत राजस्थान पत्रिका में संपादक के रूप में कार्य कर चुके हैं। वे पत्रकारिता के क्षेत्र में देव ऋषि नारद जयंती के अवसर पर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड व शिक्षाविद एवं विधिवेत्ता चंपालाल उपाध्याय स्मृति सम्मान सहित अनेक सम्मान भी प्राप्त कर चुके हैं।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org